IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

सूरजसिंह नेगी के 'वसीयत' उपन्यास में चित्रित वृद्ध विमर्श

श्री. महेश बापुराव चव्हाण

सहाय्यक प्राध्यापक एवं अध्यक्ष हिंदी विभाग

काकासाहेब चव्हाण कॉलेज, तळमावले

तहसिल-पाटण, जिला-सातारा

शोध सार

आज हम इक्कीसवीं सदी में जी रहे हैं। विश्व में विज्ञान के क्षेत्र में बड़ी तेजी से प्रगति हो रही है। आज मनुष्य के सामने सभी भौतिक सुविधाएँ हाथ जोड़कर खड़ी हैं। सभी क्षेत्रों में तेज गति से परिवर्तन हो रहा है। पारिवारिक व्यवस्था भारतीय समाज की नींव है। व्यक्ति से परिवार बनता है और परिवार से समाज बनता है। परिवार में बुजुर्ग व्यक्ति होते हैं जो परिवार को मार्गदर्शन करने का कार्य करते हैं। संस्कृति और संस्कार अगली पीढ़ी को देने का कार्य करते हैं। वृद्धावस्था में मानसिक तथा शारीरिक स्थिति के कारण असहायता तथा हीनता की भावना बढ़ जाती है। दो पीढ़ियों का अंतर काफी बढ़ने के कारण वृद्ध अगली पीढ़ी के विचारों तथा भावनाओं से जुड़ नहीं पा रहे हैं। परिणामस्वरूप दो पीढ़ियों के बीच टकराहट होने लगी है।

हिंदी साहित्य में सदियों से वृद्ध जीवन की यथार्थता को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। उपन्यास विधा में भी वृद्धावस्था की समस्याओं का चित्रण हुआ है। इसमें वृद्ध जीवन और आज के पीढ़ी के बदलते संबंधों को दर्शाया है। 'वसीयत' उपन्यास वृद्ध माता-पिता के दर्द का चित्रण करता है। इस उपन्यास में वर्तमान दौर में गिरते जीवनमूल्य, बूढ़े माँ-बाप के सामने उत्पन्न होने वाली चुनौतियाँ, नौकरी हेतु बाहर गई पीढ़ी का अपने गाँव की ओर होने वाला दुर्लक्ष आदि को चित्रित किया है। जीवन के उत्तरार्ध में जब वृद्ध माता-पिता को बच्चों के सहारे की आवश्यकता होती है तब यह बच्चे अपने ही जीवन तक सीमित रहते हैं। जो माँ-बाप अपनी आवश्यक जरूरतों में कमी कर जीवनभर अपने बच्चों का जीवन सँवारने में लगे रहते हैं। वाही बच्चे अपने माँ-बाप की वृद्धावस्था में देखभाल नहीं करते। जब विश्वनाथ को अपने पिताजी की वसीयत मिलती है तो उसके जीवन में अनेक परिवर्तन आते हैं। परिणामस्वरूप वह अपने जन्मभूमि की ओर जाता है और गाँव में सुधार करता है तथा गाँव में एक नया वातावरण निर्माण करके

अपने कर्तव्य का पालन करता है। उपन्यास में जीवनमूल्य, संस्कार, आदर्श, त्याग जैसे गुण तथा अपने जन्मभूमि के प्रति कर्तव्यभावना को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया है। माता-पिता हमेशा अपने बच्चों का विकास देखना चाहते हैं। इस कारण उनकी पढ़ाई की ओर ध्यान देते हैं। उनको पढ़ाने के लिए विदेश भेज देते हैं, परंतु वही बच्चे वापस अपने गाँव नहीं आना चाहते हैं। वहीं अपना बसेरा करते हैं। उच्च शिक्षा पाने की चकाचौंध में वे अपने माँ-बाप को भूल जाते हैं। गाँव में उनके वृद्ध माता-पिता उनकी राह देखते देखते थक जाते हैं। अपने नाती-पोते के वात्सल्य से वंचित होते हैं।

बीज शब्द- वृद्ध, वसीयत, जीवनमूल्य, संस्कार, वृद्धावस्था, कर्तव्यभावना

भूमिका-

डॉ. नेगी जी के वसीयत, रिश्तों की आँच, नियति चक्र,ये रिश्ता क्या कहलाता है और सांध्य-पथिक ये पाँचों उपन्यास वृद्ध विमर्श पर केंद्रित हैं। सभी उपन्यासों की विषयवस्तु और उद्देश अलग-अलग है परंतु सभी को जोडने वाले तत्व है-संस्कार,जीवनमूल्य और मानवीयता। प्रस्तुत उपन्यास मात्र वृद्धों की समस्याओं का चित्रण नहीं करते है अपितु समस्याओं के समाधान भी प्रस्तुत करते है। 'वसीयत' उपन्यास पूर्णत: वृद्ध विमर्श पर केंद्रित उपन्यास है। जिसमें वृद्धजन की शारीरिक, मानसिक पीड़ा, उनके मनोगत भाव, उनके प्रति अपनों के व्यवहार और उससे उपजी परिस्थितियों का चित्रण किया है। प्रस्तुत उपन्यास में लेखक ने वृद्धजनों के क्रियाशीलता,अपनों के प्यार-अपनापन की आवश्यकता को महत्त्व दिया है। युवा पीढ़ी अगर वृद्धों के अनुभव का सही उपयोग करती है तो वृद्धों से जुड़ी अनेक समस्याओं का समाधान मिल सकता है। जीवन के अंतिम पड़ाव में प्रेम, सम्मान, अपनेपन आदि की सर्वाधिक आवश्यकता होती है परंतु अगर परिवार के द्वारा उपेक्षा, घृणा, अपमान मिलता है तो वृद्ध अंदर से टूट जाता है। जब वृद्ध यह महसूस करने लगता है कि अब उसकी कोई जरूरत नहीं है तथा वह किसी योग्यता का नहीं है तो वह धीरे-धीरे मृत्यु के समीप जाता है।

सूरजसिंह नेगी के 'वसीयत' उपन्यास में चित्रित वृद्ध विमर्श

वृद्धावस्था की समस्या उम्र से ज्यादा तर मानसिक स्थिति पर निर्भर रहती है। "वैद्यकीय सुविधा एवं आर्थिक संपन्नता के कारण वृद्धों का जीवनमान बढ़ रहा है परंतु दूसरी ओर उनकी समस्याएँ भी बढ़ रही है। भूमंडलीकरण के कारण समाज में आ रहे बदलाव का काफी असर वृद्धों के जीवनपर हुआ है। आज का युवा समाज यह समझता है कि वह बूढ़ों का बोझ ढो रहा है और यह भूल जाता है कि इन्हीं वृद्धों ने अपनी युवावस्था में उन बच्चों का भरण-पोषण करके उन्हें युवा बनाया है। युवा यह भूल जाते है कि उनके शरीर में भी बुढ़ापा छिपा है। युवा यह भी भूल जाते हैं कि बूढ़ों में भी वही आशाएँ व आकांक्षाएँ होती है, वही जरूरते होती हैं और वही संवेदनाएँ होती हैं जो उन युवाओं में हैं।"[1] अर्थात वृद्धावस्था में मानसिक आधार की आवश्यकता होती है। वृद्ध और युवा में जब तालमेल होगा तभी वृद्धावस्था सुसह्य हो सकती है। जिन बच्चों को वृद्धों ने अपने खून पसीने से बड़ा किया होता है वही बच्चे जब अपने माँ-बाप को बोझ समझने लगते हैं तो वह वृद्ध टूट जाते हैं।

सूरजसिंह नेगी का जन्म उत्तराखंड स्थित अल्मोड़ा जिले में 17 दिसंबर,1967 को हुआ। सन 2016 में 'पापा फिर कब आओगे' (कहानी संग्रह), सन 2016 में 'रिश्तों की आँच', सन 2018 में 'वसीयत', सन 2019 में 'नियति चक्र', सन 2020 में 'ये कैसा रिश्ता', संध्या-पथिक(उपन्यास) सन 2023 आदि उपन्यास लिखे। उनके सभी उपन्यासों के केंद्र में वृद्ध विमर्श है।

वृद्ध विमर्श-

नालंदा विशाल शब्द सागर में वृद्ध शब्द का अर्थ "साठ वर्ष से अधिक अवस्थावाला आदमी वह जो साधारण की अपेक्षा बड़ा और श्रेष्ठ हो, बुड्ढा आदि अर्थ दिये जाते हैं।"[2]

वृद्धावस्था –

नालंदा विशाल शब्द सागर में वृदधा का अर्थ 'बुढ़ापा' दिया है। मनुष्य बाल्यावस्था, यौवनावस्था, प्रौढ़ावस्था और वृद्धावस्था इन अवस्थाओं से गुजरता है।[3]

विमर्श-

नालंदा विशाल शब्द सागर में विमर्श इस शब्द का अर्थ दिया है "किसी बात का विचार या विवेचन, आलोचना, समीक्षा, परखने का काम।"[4]

उपर्युक्त विवेचन तथा शब्दों के अर्थों को देखते हुए यह स्पष्ट होता है कि वृद्ध विमर्श यानि वृद्धों के बारे में विचार या विवेचन करना उसे परखना। प्रस्तुत शोधलेख के द्वारा डॉ.सूरजसिंह नेगी के 'वसीयत' उपन्यास में चित्रित वृद्ध विमर्श का विवेचन किया जाएगा।

वसीयत उपन्यास वृद्ध माता-पिता के दर्द का चित्रण करता है। इस उपन्यास में वर्तमान दौर में गिरते जीवनमूल्य, बूढ़े माँ-बाप के सामने उत्पन्न होने वाली चुनौतियाँ, नौकरी हेतु बाहर गई पीढ़ी का अपने गाँव की ओर होने वाला दुर्लक्ष आदि को चित्रित किया है। जीवन के उत्तरार्ध में जब वृद्ध माता-पिता को बच्चों के सहारे की आवश्यकता होती है तब ये बच्चे अपने ही जीवन तक सीमित रहते हैं। जो माँ-बाप अपनी आवश्यक जरूरतों में कमी कर जीवनभर अपने बच्चों का जीवन सँवारने में लगे रहते हैं। वही बच्चे उनके प्रति इसे केवल माँ-बाप की नैतिक ज़िम्मेदारी समझ बैठते हैं और सफलता का श्रेय अपनी मेहनत और बुद्धिमत्ता को देते हैं। यह स्थिति माँ-बाप के लिए बड़ी असहनीय होती है। उपन्यास का मुख्य पात्र विश्वनाथ जब अपने यौवनकाल में पिता द्वारा दी गई सीख और नसीहत को नहीं समझ सकता और वृद्धावस्था में अपने पुत्र के व्यवहार से दुखी रहने लगता है। ऐसी स्थिति में उसे रह रहकर अपने पिता का व्यवहार और संवेदनशीलता याद आती है जिससे वह तड़प उठता है। जब विश्वनाथ को अपने पिताजी की वसीयत मिलती है तो उसके जीवन में अनेक परिवर्तन आते हैं। परिणामस्वरूप वह अपने जन्मभूमि की ओर जाता है और गाँव में सुधार करता है तथा गाँव में एक नया वातावरण निर्माण करके अपने कर्तव्य का पालन करता है। उपन्यास में जीवनमूल्य, संस्कार, आदर्श, त्याग जैसे गुण तथा अपने जन्मभूमि के प्रति कर्तव्यभावना को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया है। माता-पिता हमेशा अपने बच्चों का विकास देखना

चाहते हैं। इस कारण उनकी पढ़ाई की ओर ध्यान देते हैं। उनको पढ़ाने के लिए विदेश भेज देते हैं, परंतु वही बच्चे वापस अपने गाँव नहीं आना चाहते हैं। उच्च शिक्षा पाने की चकाचौंध में वे अपने माँ-बाप को भूल जाते हैं। वहीं अपना बसेरा करते हैं। गाँव में उनके वृद्ध माता-पिता उनकी राह देखते देखते थक जाते हैं। अपने नाती पोते के वात्सल्य से वंचित होते हैं।

विश्वनाथ हमेशा मन में एक धारणा पालता है कि उसके बाबूजी ने उसके लिए किया ही क्या है? वह कभी भी अपने बाबूजी और गाँव के विषय में सोचना ही नहीं चाहता था, लेकिन जब उनका पुत्र राजकुमार विदेश से पढ़ाई करके दिल्ली बसता है तो विश्वनाथ को अपने बाबूजी के दर्द का एहसास होता है। विश्वनाथ शहर की चकाचौंध के आगे अपनी माटी तथा परिवार से दूर होता है। विश्वनाथ जब अपने बेटे को फोन करना चाहते हैं तो भी राजकुमार उत्तर नहीं देता है। वह कहता है, "पापा अब आप ठहरे रिटार्यड आदमी दिन भर आराम ही आराम, अरे हमें तो ठीक से काम करने दो।"[5] विश्वनाथ अपने बेटे से बात करने तक तरसता है। एक समय था जब विश्वनाथ को अपने बाबूजी के लिए समय नहीं था। आज उसके बेटे राजकुमार को उसके लिए समय नहीं है।

वसीयत उपन्यास की सुधा कहती है, "माँ-बाप के त्याग का क्या कोई मोल है भला? जिन बच्चों के लिए जीवनभर सबकुछ न्योछावर करते रहते हैं, हमेशा उनके खुशहाल जीवन की कामना करते है, उनके मलमूत्र को स्वयं साफ करते हैं और बच्चे बड़े होने पर यह जवाब देते हैं कि हमारे लिए किया ही क्या है? माँ-बाप के साथ दो पल बैठकर बात करने या फोन पर बात करने की उनको फुर्सत नहीं मिल पाती। क्या इसी दिन के लिए माँ-बाप बरसों तपस्या करते हैं।"[6] इससे वृद्ध जीवन की असहायता एवं पीड़ा का एहसास होता है। विश्वनाथ और सुधा ने अपने बेटे राजकुमार को पढ़ने के लिए विदेश भेजा, डॉक्टर बनाया। उसी को अपने माता-पिता को मिलने की फुर्सत नहीं है यहाँ तक कि फोन पर भी बोलने के लिए उसके पास समय नहीं है। वृद्धावस्था में उन्हें अपने बच्चों के सहायता की आवश्यकता होती है उसी समय बच्चे वृद्धों का साथ छोड़ देते हैं।

विश्वनाथ जब अपने गाँव की वृद्ध मंडली में बैठता है तो गाँव के वृद्धों की आँखों में उसे रिक्तता महसूस होती है। सब लोग संपन्न थे। बच्चे अच्छी जगहों पर थे। मकान जायदाद संपत्ति किसी बात की कोई कमी नहीं थी। लेकिन इन लोगों के जीवन में एक चाहत थी कि उनके अस्तित्व को पहचाना जाए। घर के प्रत्येक खुशी के अवसर पर उनको भी सामील किया जाए। विश्वनाथ जब गाँव जाने का निर्णय लेता है तो अपने घर के कागजात और बाबूजी की वसीहत अपने बेटे राजकुमार को भेजता है। गाँव जाते समय रानीखेत में दादाजी के द्वारा बनाया वृद्धाश्रम देखता है तो उसे अपने दादाजी के महान कार्य का एहसास होता है। जब वह गाँव जाता है तो देखता है कि बूढ़े माँ-बाप की पथराई आँखों में परदेस गए जवान बेटे के इंतजार के लिए आतुरता दिखाई देती है। विश्वनाथ परदेश गए सभी जवानों को गाँव बुलाता है तो गाँव में उत्सव का स्वरूप आता है। खुद उनका बेटा राजकुमार भी अपने बीवी बच्चों के साथ गाँव आता है तो विश्वनाथ को अपने पुरखों द्वारा दिए गए जीवनमूल्य एवं संस्कारों की अहमियत समझ में आती है।

विश्वनाथ जब नौकरी करता था तब वह अलग दुनिया में ही रहता था। उसके पास घरवालों के लिए समय नहीं था, लेकिन जब वह सेवानिवृत्त होता है तो परेशान हो जाता है। विश्वनाथ ने न अपने माँ-बाप को समय दिया न सुधा को। तब सुधा सोचती है,

"क्या एक इंसान की ये स्थिति हो भी सकती है कि भला जिसे किसी समय घरवालों से बात करने तक की फुरसत नहीं हुआ करती थी हमेशा उसे कोई ना कोई घेरे रहता था आज वही व्यक्ती दूसरों से बातें करने को तरस गया है।"[7] सुधा के विचार से स्पष्ट हो जाता है कि वृद्धावस्था में व्यक्ति को कोई ना कोई बातें करने वाला चाहिए होता है। जब वह पद पर होता है तो कई व्यक्ती उसको घेरे रहते हैं, लेकिन जैसे ही पद जाता है तो कोई उसके पास नहीं आता यही जीवन का सत्य अगर वृद्ध समझ लेता है तो उसको जीने में सुविधा होती है। व्यक्ति के पास जब पद होता है तो खुद को सर्वोत्तम मानने की भूल वह करता है, लेकिन पद जाते ही वह जमीन पर आ जाता है। सुधा अपने पति को लोगों में घुल-मिलकर जीने की सलाह देती है। सुधा हमेशा मानवता के प्रति गहरी आस्था रखते हुए अपनी जडों से जुडे रहना चाहती थी और विश्वनाथ को भी इसके लिए प्रेरित करती है।

सुधा को एहसास होता है कि "माँ-बाप की दुनिया सचमुच अपने बच्चों की खुशियों और उनके क्रियाकलापों के साथ सिमटकर रह जाती है। माँ-बाप बच्चों के लिए अपने अस्तित्व तक को मिटा डालते हैं। उनकी अपनी इच्छा, आवश्यकता सब कुछ बच्चों की खुशी के आगे गौण हो जाती है।"[8] विश्वनाथ और सुधा के लिए राजकुमार ही सबकुछ था। उसके ख़ुशी के आगे सब गौण था। आज वही राजकुमार अपने माता-पिता को मिलने तक नहीं आता। पिता बीमार होने बावजूद वह विदेश जाने का बहाना बनाकर उनसे मिलना टालता है।

विश्वनाथ सोचता है, "क्या उम्र के एक पड़ाव के बाद बड़े-बुजुर्गों की किसी को आवश्यकता नहीं रह जाती भला? शायद सच्चाई यही है, बूढ़ों की किसी को जरूरत नहीं होती, वह बोझ ही हो जाते है। उनकी उपस्थिति बच्चों को उनकी आजादी में दखल लगने लगती है।"[9] इससे स्पष्ट होता है कि वृद्धावस्था में बच्चे साथ नहीं देते। वे अपनी दुनिया में व्यस्त हो जाते हैं। माँ-बाप उनको बोझ लगने लगते हैं। राजकुमार के व्यव्हार से विश्वनाथ और सुधा दोनों आहात होते है। राजकुमार को लेकर दोनों के मन के कई सपने थे, लेकिन वह उनके सपनों को ध्वस्त करता है। वह अपनी शादी खुद तय करता है। दिल्ली में रहने का निर्णय भी खुद लेता है। वह अपनी ही दुनिया में व्यस्त रहता है। यहाँ तक की अपने माँ-बाप के साथ फोन पर भी बोलना उसे अच्छा नहीं लगता।

विश्वनाथ जब घूमने के लिए पार्क में जाता है तो उसकी मुलाकात बाकी वृद्धों से होती है। प्रत्येक वृद्ध की अपनी पीड़ा है। अपने घर में वह उपेक्षित जीवन जी रहा है। जिस वृद्ध के लिए किताबे जीवन है वही उसकी बहू-पोते को कबाड़ लगते हैं तो वह वृद्ध अत्यंत पीड़ित होता है। उनके अपने बेटे भी उनका साथ नहीं देते। विश्वनाथ का बेटा राजकुमार शहर में आकर भी अपने माँ-बाप को नहीं मिलता वह उनको झूठ बोलता है कि वह विदेश जाने वाला है। यह उपन्यास युवा पीढ़ी द्वारा पुरानी पीढ़ी पर होने वाले अन्याय को दर्शाता है। विश्वनाथ ने अपने बाबूजी के प्रति ऐसा ही व्यवहार किया था। वह अपने माँ-बाबूजी के अंतिम संस्कार में भी नहीं गया था। यह उपन्यास पिता-पुत्र के संबंध को चित्रित करता है। पिता बाहर से जितना कठोर दिखाता है अंदर से उतना ही मुलायम होता है। वह गुस्से में अपने बच्चों पर हाथ उठाता भी है तो अकेले में पछताव स्वरूप आँसू बहाता है। प्रस्तुत उपन्यास में एक पिता के मन में

अपने संतान के प्रति अव्यक्त प्रेम को दर्शाया है। एक पिता हमेशा संतान की भलाई सोचता है, लेकिन बच्चे अपने मन में पिता के प्रति द्वेष पालते है। इसका परिणाम उनकर सबंध पर हो जाता है।

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि 'वसीयत' उपन्यास वृद्धों के लिए एक नया रास्ता ढूँढने का प्रयास करता है। वृद्ध अपने अनुभव को अपनी माटी के विकास में लगा सकते है। जहाँ से वे उठे है उन गाँवों मे जाकर वे लोगों को जागृत कर सकते हैं। उपन्यास का नायक विश्वनाथ अपने बेटे राजकुमार की राह देखते-देखते थक जाता है परंतु जब वह अपने पिताजी की डायरी पढ़ता है तो उसे एहसास होता है कि उसने अपने पिता के साथ कितना अन्याय किया है। पिताजी की डायरी पढ़कर विश्वनाथ को नया रास्ता मिलता है और वह अपने गाँव में जाकर सभी लोगों को इकट्ठा करके कई काम करता है। उपन्यास के अंत में उनका बेटा राजकुमार अपने बीवी बच्चों के साथ गाँव आता है तो उसके खुशी का ठिकाना नहीं रहता। 'वसीयत' उपन्यास पूर्णत: वृद्ध विमर्श पर केंद्रित उपन्यास है। जिसमें वृद्धजन की शारीरिक, मानसिक पीड़ा, उनके मनोगत भाव, उनके प्रति अपनों के व्यवहार और उससे उपजी परिस्थितियों का चित्रण किया है। प्रस्तुत उपन्यास में लेखक ने वृद्धजनों के क्रियाशीलता,अपनों के प्यार-अपनापन की आवश्यकता को महत्त्व दिया है। युवा पीढ़ी अगर वृद्धों के अनुभव का सही उपयोग करती है तो वृद्धों से जुड़ी अनेक समस्याओं का समाधान मिल सकता है।

संदर्भ ग्रंथ

1. वृद्धावस्था विमर्श संपादक- चंद्रमौलेश्वर प्रसाद पृष्ठ क्रं 18
2. नालंदा विशाल शब्दसागर-संपा-श्री नवल जी पृष्ठ क्रं.1276
3. वही पृष्ठ क्रं.1276
4. वही पृष्ठ क्रं.1297
5. डॉ- सूरजसिंह नेगी.वसीयत पृष्ठ क्रं 47
6. वही पृष्ठ क्रं.48
7. वही पृष्ठ क्रं.50
8. वही पृष्ठ क्रं.261
9. वही पृष्ठ क्रं.144